प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

प्रकृति में प्रेम का स्पन्दन जीवन को पोषित करता है। पेड़-पौधे एक अत्यन्त गूढ़ बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं और एक व्यापक, पेचीदे, सहयोगपूर्ण तन्त्रजाल का उपयोग कर एक-दूसरे के साथ पोषक-तत्त्व साझा करते हैं। यह धरती के नीचे होने वाला उद्यम है जो जड़ों इत्यादि के माध्यम से होता है। एक अभूतपूर्व प्रेम कार्यरत है, निरन्तर।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।